बुराई निकालना

आयतुल्लाह अल्लामा सैय्यद मुहम्मद रज़ी रिज़वी साहब क़िब्ला, कराची पाकिस्तान
अनुवादकः सय्यद सुफ़यान अहमद नदवी

क़ुरआने हकीम में अल्लाह ने फ़रमाया हैः ऐ ईमान वालो बहुत से गुमानों से बचो क्योंकि कुछ गुमान गुनाह हुआ करतें हैं और लोगों की टोह में न लगे रहा करो और तुम में से कोई किसी की ग़ीबत न किया करे।

बुराई निकालने से मुराद यही है कि दूसरों की टोह लगाई जाए, उनकी कमियों और बुराईयों को ढूँढा जाए और उन पर से पर्दा उठाया जाए। ज़ाहिर है कि इस्लाम ने बिल्कुल इसकी इजाज़त नहीं दी सिवाए ऐसे हालात और ऐसी सूरतों में जब किसी के निजी हालात और छुपी आदतें शरअी नुक़्त-ए-नज़र से मालूम करना जाएज़ या ज़रूरी हो जाए और बग़ैर मालूम किये इन्फ़ेरादी या इज्तेमाई नुक़सानात पैदा होने का अन्देशा हो। मिसाल के तौर पर कोइ शख़्स किसी को नौकर रखना चाहता है तो उसके हालात का पूरी तरह इल्म हासिल होना ज़रूरी है, इसी तरह शादीशुदा ताल्लुक़ात के लिए भी यह बात बिल्कुल ठीक बल्कि ज़रूरी है कि दोनों फ़रीक़ एक दूसरे के तमाम हालात से बाख़बर हों ताकि उनमें से कोई धोका न खा सके।

लेकिन अगर इस तरह की कोई सूरत नहीं है तो फिर बुराई निकलना एक अख़लाक़ी जुर्म है जिसकी इस्लाम इजाज़त नहीं देता। जैसा कि आयते करीमा में इसका ज़िक्र है इसमें तीन तरह की बुराईयों से रोका गया है एक तो यह कि बग़ैर कामिल (पूरी) तहक़ीक़ के किसी की तरफ़ से बुरा न सोंचा जाए, दूसरे किसी की बुराई मालूम करने के लिए टोह न ली जाए और तीसरी ये बात है कि कोई किसी की ग़ीबत यानी पीठ पीछे बुराई न करे।

इस वक़्त का बयान का मौज़ू अगरचे बुराई निकालना है यानी कमी निकालना और टोह लगाना है मगर हक़ीक़त में बुरा सोचना और ग़ीबत भी इस मौज़ू से बेताल्लुक़ नहीं है। बदगुमानी का इससे सबबी ताल्लुक़ है और ग़ीबत इसके नतीजे में जुड़ी हुई। इसका मतलब ये हुआ कि बुराई निकालने का शौक़ और ख़्वाहिश बुरा सोंचने की वजह से ही होता है फिर बुराई निकालने का नतीजा यह होता है कि किसी की छुपी बातों को ज़ाहिर किया जाए यानी उसकी कमियों और छुपी बातों को दूसरों के सामने उछाला जाए और मशहूर किया जाए, यही ग़ीबत है।

इसका हासिल यह हुआ कि अगर बुरा सोचना बिल्कुल ही न हो तो बुराई निकालने और जासूसी का सवाल ही पैदा नहीं हो सकता। और जब जासूसी और बुराई निकालने की फ़िक्र ही न होगी तो फिर ग़ीबत और बुराई क्यों की जाएगी फिर उसका दूसरा रुख़ यह भी सामने आ गया कि बुराई निकालना सिर्फ अकेली बुराई और अकेला गुनाह नहीं है बल्कि मजमुआ है तीन बुरे गुनाहों का जिनमें से हर एक इन्सान की अकेली और इज्तेमाई ज़िन्दगी के लिए पूरी तरह तबाही वाला है।

इसी के साथ जासूसी और बुराई निकालने के दरमियान थोडा सा फ़र्क़ है। जासूसी से मुराद ये है कि आदमी दूसरों की छुपी बातों और छुपी हुई कमियों की खोज लगाए और टोह ले जबकि बुराई निकालना इसके कहते हैं कि किसी की बुराईयाँ ढूँढ कर उनको फैलाया जाए और उस शख़्स की हैसियत को लोगों की नज़र से गिराने की कोशिश की जाए। बहरहाल जासूसी और

बुराई निकालना तक़रीबन मिलती जुलती बातें हैं और उनसे इन्सानी समाज को बेइन्तेहा नुक़सान पहुँच सकता है। अगर इनकी रोकथाम न की जाए। चूँकि इस्लाम की पहली और बुनियादी नज़र, अख़लाक़ की मज़बूती पर है और उसने सब बातों से ज़्यादा इन्सानी किरदार के सुधार और बनाने पर ज़ोर दिया है इसलिए उसने बुराई निकालने, जासूसी, ग़ीबत और बदगुमानी को रोकने के लिए सख़्त क़दम भी उठाये हैं ताकि मुसलमान की इन्फ़ेरादी ज़िन्दगी भी तबाही से महफ़ूज़ रह सके और उसकी इज्तेमाई ज़िन्दगी भी फ़ित्ने और फ़साद और आपसी बिगाड़ और अफ़रातफ़री से बच जाये।

इन्फ़ेरादी ज़िन्दगी की तबाही तो इस तरह है कि जब कोई शख़्स किसी दूसरे की बुराई निकालने में लगा रहे गा और अपनी पूरी ज़हनी सलाहियातों को सिर्फ़ इसी काम में लगा देगा तो फिर यक़ीनी तौर पर वह अपनी ज़ाती कमज़ोरियों और ज़ाती कमियों को भुला देगा और नतीजे में उसकी अपनी कमज़ोरियाँ सख़्त हो जाएंगी और उसकी इन्फ़ेरादी ज़िन्दगी को बेकार बना देंगी। और इज्तेमाई ज़िन्दगी की तबाही इस तरीक़े पर कि बुराई निकालने की बुरी आदत से लोगों में इख़्तेलाफ़ पैदा होंगे, आपस में एक दूसरे के ख़िलाफ़ सख़्ती पैदा होगी फिर जो सख़्ती के नतीजे हुआ करते हैं वह लाज़मी तौर पर सामने आयेंगे और इज्तेमाई अम्नो सुकून को हमेशा के लिए ख़त्म कर देंगे।

इस बात को देखते हुए कि इस्लामी समाज का नज़्म ख़राब न हो और वह इन्तेशार व फ़सादात से महफ़ूज़ रहे बुराई निकालने ही की तरह कुछ दूसरी ख़तरनाक बुराईयों से बचे रहने की तालीम क़ुरआने हकीम के सूर-ए-हुजरात में इस तरह दी गई हैः- ''ऐ ईमान वालों! न तो मर्दों को मर्दों पर हंसना चाहिए क्या ताज्जुब कि वह उनसे बेहतर हों (यानी जो उन पर हंस रहे हैं और उनका मज़ाक़ उड़ा रहे हैं) और न औरतों को औरतों पर हंसना चाहिए क्या अजब कि वह औरतें इन औरतों से बेहतर हों और न एक दूसरे को ताने दो और न एक दूसरे को बुरे नामों से पुकारो। ईमान के बाद गुनाह का नाम ही बुरा है और जो लोग अब भी तौबा न करेंगे वह यक़ीनन ज़ालिम ठहरेंगे।'' (हुजरात, आयत-11) इस आयत में जिन बुराईयों को रोका गया है वह सब भी बुराई निकालने ही की तरह तबाह करने वाले नतीजे रखती हैं इसलिए इस्लाम उन तमाम बुराईयों की निशानदही कर रहा है ताकि इन्सान अपने वह इन्फ़ेरादी और इज्तेमाई फ़राएज़ पूरे अम्नो सुकून के साथ अन्जाम दे सके जिनके लिए उसको पैदा किया गया है। इसी तरह सूर-ए-नूर में फ़रमाया गयाः- ''जो लोग चाहते हैं कि मुसलामानों के दरमियान बेहयाई का चर्चा रहे उनके लिए दर्दनाक सज़ा है इस दुनिया में भी और उसके बाद आख़िरत में भी''

ग़रज़ इस्लाम की बुनियादी तालीम यह है कि समाज में बुराईयों को फैलने से पूरी ताक़त के साथ रोका जाए और एक लमहे के लिए भी उनको न फैलाया जाए। इसके बाद जहाँ तक इन्फ़ेरादी बुराईयों का ताल्लुक़ है चूँकि उनका दायरा शख़्सी हदों में घिरा हुआ होता है इसलिए उनका सुधार निस्तबतन आसान होगा फिर एक सुधरा हुआ समाज ख़ुद भी अपने लोगों के किरदार को सुधारने में बड़ी मदद देता है।

हुज़ूर सरवरे काएनात[स०] का इरशाद है कि *''जो मुसलमान अपने मुसलमान भाई की बुराई निकालने की कोशिश करता है उसका हर हर क़दम जहन्नम में होता है और उसकी एक सज़ा तो ये है कि अल्लाह उस शख़्स की अपनी बुराईयाँ अपने आप दुनिया के सामने कर देता है।''* अमीरुलमोमिनीन हज़रत अली[अ०] ने फरमाया हैः *''क्या कहना उस मुसलमान का जिसको अपने नफ़्स की कमियों और बुराईयों का ढूँढना और उनका सुधार दूसरों की बुराई निकालने से रोक दे और इसका मौक़ा ही न दे।''* एक दूसरे मौक़े पर आपने फ़रमाया हैः *मुसलमान के गुनाहों में से एक बड़ा गुनाह ये है कि वह अपनी ज़ात की बुराईयों से अन्जान हो।* एक हदीस में आया है कि जो शख़्स किसी मुसलमान की बुराई और कमी और गुनाहों को जान जाए और उस बुराई और गुनाह को मशहूर कर दे बजाए उसके छुपाने और उस पर पर्दा

डालने के, तो अल्लाह के नज़दीक उस मशहूर करने वाले को भी वही सज़ा पाने का हक़ होगा जिसका वह गुनाहगार आदमी हक़ रखता है बल्कि मशहूर करने की वजह से उस शख़्स की सज़ा में बढ़ोत्तरी हो जायेगी।

हुज़ूर अनवर[स०] ने एक और हदीस में फ़रमाया है जिसका हासिल ये है कि ऐ मसलमानों! तुम आपस में एक दूसरे की बुराई की टोह न लगाओ वरना ऐसे शख़्स को जो दूसरों की बुराई निकालता है और उन्हें बेइज़्ज़त करने की कोशिश करता है घर बैठे ही अल्लाह बेइज़्ज़त कर देता है और वह अपने आप लोगों में बदनाम हो जाता है। बेशक हमारे लिए ज़रूरी है कि हम दूसरों की बुराईयाँ ढूँढने के बजाए अपनी सारी कोशिश ख़ुद अपनी ही बुराईयों को तलाश करने में लगा दें और दूसरों के सुधार से पहले ख़ुद अपना सुधार करें क्योंकि जो ख़ुद सही रास्ते पर न होगा वह दूसरों की हिदायत कैसे कर सकता है। अगर हर शख़्स सिर्फ़ अपनी ही ज़ात के सुधार का काम अपने ज़िम्मे ले ले तो सारा समाज अपने आप ठीक हो जाएगा।

सरवरे अम्बिया[स०] का फ़रमान हैः इन्सान की इससे बढ़कर कोई बुराई नहीं है कि वह दूसरों की बुराईयाँ तो देखे मगर ख़ुद अपनी बुराईयों और कमियों की तरफ से उसकी आँखें बन्द हों। ❁❁❁

अक़वाले फ़ातिमा ज़हरा[स०]

- कनाअत और ताअते ख़ुदा बेनियाज़ी और इज़्ज़त की और गुनाह और लालच बदबख़्ती की निशानी है
- जो औरत अपने शौहर को सख़्त और मुश्किल कामों के लिए मजबूर न करे वह जन्नती है और ख़ुदा उस से राज़ी है।
- वह मर्द जो हवाओ हवस के बन्दे हों वह समाज के लिए ज़लालत की वजह बनते हैं।
- तुम्हें क्या हो गया है? तुम किधर जा रहे हो जबकि कुरआनी अहकामात बहुत साफ़ और वाज़ेह हैं।
- ख़ुदावन्दे आलम ने ईमान को शिर्क से पाकीज़गी की वजह और नमाज़ को दिलों से तकब्बुर और घमण्ड को दूर करने की वजह बनाया है।
- अवाम की भलाई अच्छी बातों का हुक्म करने में है।
- माँ-बाप की इताअत अल्लाह के अज़ाब से बचाती है।
- सिला-ए-रहम उम्र को बढ़ाने का सबब है।